5/12/18 (M)

[This question paper contains 8 printed pages]

Your Roll No. : .....

Sl. No. of Q. Paper : **7545** **IC**

Unique Paper Code : 12131301

Name of the Course : **B.A.(Hons.) Sanskrit - CBCS**

Name of the Paper : Classical Sanskrit Literature

Semester : III

Time : 3 Hours ***Maximum Marks : 75***

Instructions for Candidates :

परिक्षार्थियों के लिए निर्देश :

(a) Write your Roll No. on the top immediately on receipt of this question paper.

इस प्रश्न-पत्र के प्राप्त होने पर तुरंत शीर्ष पर अपना रोल नंबर लिखें।

(b) Answer may be written either in **Sanskrit** or in **English** or in **Hindi**; but the same medium should be used throughout the paper.

P.T.O.

nunotes.in

इस प्रश्न-पत्र का उत्तर संस्कृत या अंग्रेजी या हिंदी किसी एक भाषा में दीजिए, लेकिन सभी उत्तर एक ही भाषा में होने चाहिए।

(c) Answer **all** questions.

सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. Translate the following : 3×4=12

निम्नलिखित का अनुवाद करें :

(क) खगाः वासोपेताः सलिलमवगाढो मुनिजनः
प्रदीप्तोऽग्निर्भाति प्रविचरति धूमो मुनिवनम्।
परिभ्रष्टो दूराद्रविरपि च संक्षिप्तकिरणो
रथं व्यावर्त्यासौ प्रविशति शनैरस्तशिखरम्।।

OR

अथवा

अहमवजितः पूर्वं तावत् सुतैः सह लालितो
दृढमपहृता कन्या भूयो मया न च रक्षिता।
निधनमपि च श्रुत्वा तस्यास्तथैव मयि स्वता
ननु यदुचितान् वत्सान् प्राप्तुं नृपोऽत्र हि कारणम्।।

(ख) इदं किलाव्याजमनोहरं वपु-
स्तपःक्षमं साधयितुं य इच्छति।
ध्रुवं स नीलोत्पलपत्रधारया
समिल्लतां छेतुमृषिर्व्यवस्यति।।

OR

अथवा

शुश्रूषस्व गुरुन्कुरु प्रियसखीवृत्तिं सपत्नीजने
भर्तुर्विप्रकृतापि रोषणतया मा स्म प्रतीपं गमः।
भूयिष्ठं भव दक्षिणा परिजने भाग्येष्वनुत्सेकिनी
यान्त्येवं गृहिणीपदं युवतयो वामाः कुलस्याधयः।।

(ग) प्राकारं परितः शरासनधरैः क्षिप्रं परिक्रम्यतां
द्वारेषु द्विरदैः प्रतिद्विपघटाभेदक्षमैः स्थीयताम्।
त्यक्त्वा मृत्युभयं प्रहर्त्तुमनसः शत्रोर्बले दुर्बले
ते निर्यान्तु मया सहैकमनसो येषामभीष्टं यशः।।

P.T.O.

muquestions.in

OR

अथवा

श्यामीकृत्याननेन्दूनरिपुयुवतिदिशां सन्ततैः शोकधूमैः
कामं मन्त्रिद्रुमेभ्यो नयपवनहृत्तं मोमभस्म प्रकीर्य्य।
दग्ध्वा सम्भ्रान्तपौरद्विजगणरहितान् नन्दवंशप्ररोहान्
दाह्याभावान्न खेदाज्जवलन इव वने शाम्यति क्रोधवह्निः।।

2. Explain with references to the context of the following : 3×6=18

निम्नलिखित की सप्रसंग व्याख्या करें :

(क) परिहरतु भवान् नृपापवादं
न परुषमाश्रवासिषु प्रयोज्यम्।
नगरपरिभवान् विमोक्तुमेते
वनमभिगम्य मनस्विनो वसन्ति।

OR

अथवा

प्रच्छाद्य राजमहिषीं नृपतेहितार्थं
कामं मया कृतमिदं हितमित्यवेक्ष्य।
सिद्धेऽपि नाम मम कर्मणि पार्थिवोऽसौ
किं वक्ष्यतीति हृदयं परिशकितं मे।।

(ख) शुद्धान्तदुर्लभमिदं वपुराश्रमवासिनो यदि जनस्य।
दूरीकृताः खलु गुणैरुद्यानलता वनलताभिः।।

OR

अथवा

अर्थो हि कन्या परकीय एव
तामद्य संप्रेष्य परिग्रहीतुः।
जातो ममायं विशदः प्रकामं
प्रत्यर्पितन्यास इवान्तरात्मा।।

(ग) स्वयमाहृत्य भुञ्जाना बलिनोऽपि स्वभावतः।
गजेन्द्राश्च नरेन्द्राश्च प्रायः सीदन्ति दुःखिताः।।

OR

अथवा

उत्सिक्तः कुसचिवदृष्टाराज्यभारो
नन्दोऽसौ न भवति चन्द्रगुप्त एषः।
चाणक्यस्त्वमपि च नैव केवलं ते
साधर्म्यं मदनुकृतेः प्रधानवैरम्।।

mnotes.in

3. Explain any **one** in Sanskrit of the following : 7

निम्नलिखित में से किसी एक की संस्कृत में व्याख्या करें :

सुखमर्थो भवेद् दातुं सुखं प्राणाः सुखं तपः।
सुखमन्यद् भवेद् सर्वं दुःखं न्यासस्य रक्षणम्।।
ययातेरिव शर्मिष्ठा भर्तुर्बहुमता भव।
सुतं त्वमपि सम्राजं सेव पूरुमवाप्नुहि।।

OR

अथवा

शममेष्यति मम शोकः कथं नु वत्से त्वयारचितपूर्वम्।
उटजद्वारविरुढं नीवारबलिं विलोकयतः।।

4. write short notes on any **two** of the following : 2×4=8

निम्नलिखित में से किन्हीं **दो** पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखें :

नान्दी, विष्कम्भक, विदूषक, प्रस्तावना

5. Discuss the importance of first or sixth act of 'स्वप्नवासवदत्तम्' drama. 15

'स्वप्नवासवदत्तम्' नाटक के प्रथम अथवा षष्ठ अंक का महत्त्व बताइए।

OR

अथवा

Explain the dramatic style of Kalidasa according to अभिज्ञानशाकुन्तलम्".

'अभिज्ञानशाकुन्तलम्" के आधार पर कालिदास की नाट्यकला की विवेचना कीजिए।

OR

अथवा

Discuss the importance of third act of 'मुद्राराक्षस' drama .

'मुद्राराक्षस' नाटक के तृतीय अंक का महत्त्व बताइए।

6. Focus on features of Sanskrit drama. 15

संस्कृत नाटकों के स्वरुप पर प्रकाश डालिए।

mundes.in

OR

अथवा

Write short notes on any **two** of the following :

निम्नलिखित में से किन्हीं **दो** पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखें :

कालिदास, भवभूति, विशाखदत्त, भास

munotes.in